Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
M.A. II Sem Philosophy
CC-09 - Indian Linguistic trends

"भाषा विश्लेषण का तात्त्विक आधार"

तत्त्वमीमांसा दर्शन का वह प्रभाग है जिसमें मूल तत्त्व की खोज की जाती है। मूलतत्त्व वह अनादि और अनन्त सत्ता है जो विश्व की उत्पत्ति, स्थिति और विनाश का कारक है। भारतीय भाषाविश्लेषण की दृष्टि से तत्त्वमीमांसीय - ज्ञानमीमांसीय सिद्धान्त के रूप में दो ही सिद्धान्त प्रमुख हैं प्रत्ययवाद एवं वस्तुवाद। प्रत्ययवाद के प्रबल समर्थक बौद्ध दर्शन तथा अद्वैत वेदान्त दर्शन हैं जबकि न्याय दर्शन तथा मीमांसा दर्शन वस्तुवाद के समर्थक हैं। बौद्ध दर्शन में भी दो प्रकार के प्रत्ययवादी स्वरूप हैं — नागार्जुन का शून्यवाद तथा असंग वसुबन्धु का विज्ञानवाद। मीमांसा दर्शन में भी मुख्यतः दो प्रकार के वस्तुवादी स्वरूप हैं — प्रभाकर का वस्तुवाद तथा कुमारिल का वस्तुवाद। बौद्ध दर्शन में भी वस्तुवाद के दो स्वरूप पाये जाते हैं — वैभाषिक या सौत्रान्तिक।

सभी भारतीय दार्शनिक विश्लेषकों ने भाषा विश्लेषण के तत्त्वमीमांसीय आधार के रूप में ब्रह्मवाद को ही मान्यता दी है। यही कारण है कि ऋग्वेद में उल्लिखित वाक के चार स्तरों को ब्रह्म के चार स्तरों से तादात्म्य किया जाता है। ब्रह्म के चार स्तर हैं — परब्रह्म, ईश्वर, हिरण्यगर्भ तथा विराट या वैश्वानर। विराट या वैश्वानर

ब्रह्म की अभिव्यक्त अवस्था है जिसे विराट कहा जाता है। विश्व का गर्भस्थ स्थल हिरण्यगर्भ है जिसमें विश्व अण्डकोश के रूप में पाया जाता है। इस अण्डकोश की उत्पत्ति ईश्वर द्वारा होती है। ईश्वर ही विश्व की सृष्टि, स्थिति और प्रलय करता है। ब्रह्म की ये तीन अवस्थाएँ या स्तर व्यावहारिक हैं। परन्तु परब्रह्म सृष्टि-स्थिति-प्रलय से परे निराकार, पूर्ण, एक और अद्वितीय अवस्था है जो पारमार्थिक सत्ता के नाम से जाना जाता है।

वाक् के चार स्तर :—

ऋग्वेद में वाक् के चार स्तर बतलाये गये हैं — परा, पश्यन्ति, मध्यमा और बैखरी। इनमें से मनुष्य केवल बैखरी को अच्छी तरह जान सकता है। बैखरी साधारण या बोलचाल की भाषा है, जिसका प्रयोग हम प्रतिदिन करते हैं। यह स्थूल भाषा या शब्द है जो किसी-न-किसी स्थूल या सांसारिक (भौतिक) वस्तु को निर्दिष्ट या सूचित करता है। यह श्रोत इन्द्रिय का विषय है और इसका स्थान कंठ तथा तालु के मध्य पाया जाता है। यह उसी तरह से व्यावहारिक भाषा है जिस तरह से विराट (विश्व) व्यावहारिक सत्ता है। विश्व दृश्य है तो बैखरी श्रव्य है। मध्यमा का स्थान हृदय-प्रदेश है।

यह प्रेम और भक्ति की भाषा है
यह अनुभूति की अभिव्यक्ति मात्र है
जिसे शब्दों से बयां करना असंभव है।
यह मूक भाषा है। यह आन्तरिक भाव
होने से श्रव्य नहीं है, इसलिए इसे भाव
की भाषा कही जाती है। यह वैखरी की
अपेक्षा सूक्ष्म और बौद्धिक होती है।
पश्यन्ति मध्यमा से भी अधिक सूक्ष्म
होती है। इसका स्थान नाभि प्रदेश है।
इस भाषा को योगी ही जान सकता है।
साधारण व्यक्ति के लिए यह अगोचर
होता है। यह गूढ़ भाषा है, जिसे
यो आध्यात्मिक भाषा है।
आध्यात्मिक भाषा है। परा भी
सूक्ष्मतम एवं इतना गूढ़ होता है कि इसे
योगी भी नहीं जान सकता। इसलिए
इसे पारमार्थिक और अनिर्वचनीय कहा गया
है। इसका स्थान मूलाधार के नीचे है।
इसलिए यह अव्यक्त है।
ऋग्वेद में कहा गया है
कि मनुष्य केवल वैखरी को जान सकता
है, समझ सकता है, बोल सकता है।
शेष वाक (मध्यमा, पश्यन्ति और परा)
गुफा में छिपा रहता है अर्थात मनुष्य
उन्हें न तो जान समझ सकता
न ही बोल सकता है। परब्रह्म, ईश्वर
और हिरण्यगर्भ को भी जानना
मनुष्य के लिए असंभव नहीं है।
परब्रह्म के विषय में तो साधक
भी कुछ नहीं कह सकता। ईश्वर

को भी कैवल्य योगी ही जान पाते
हैं। रामकृष्ण परमहंस जैसे विरले ज्ञानी
ही ईश्वर का साक्षात्कार कर पाते हैं और
हिरण्यगर्भ को भी जानना संभव नहीं है, विश्व
के प्रत्यक्ष के आधार पर इसकी अनुभूति
हो सकती है। विश्व या वैश्वानर को छोड़कर
सभी सत्ताएँ अप्रत्यक्ष हैं। यही कारण
है कि वाक् (भाषा) को ब्रह्म की संज्ञा
दी जाती है। ब्रह्मवाद ब्रह्म (आत्मा)
की चार अवस्थाओं का भी उल्लेख
करता है - तुरीय, सुषुप्ति, स्वप्न और
जाग्रत। विश्व या विराट् जाग्रत अवस्था
है जिसका प्रत्यक्ष सभी व्यक्तियों को
होता है। बैखरी वाक की जाग्रत अवस्था
है जिसे सभी व्यक्ति सुन-समझ
सकते हैं। ब्रह्म की स्वप्न अवस्था
हिरण्यगर्भ के समान है। हिरण्यगर्भ
स्वप्नावस्था अप्रत्यक्ष है, क्योंकि स्वप्न
की अनुभूति मानसिक स्तर तक होती है,
इसका बाह्य प्रकटन नहीं होता। इसी
तरह मध्यमा वाक का बाह्य प्रकटन
नहीं होता है, बल्कि हृदय और
मन के स्तर पर इसकी अनुभूति होती है।
सुषुप्ति की अवस्था ईश्वर-सदृश
है। विराट या जाग्रत अवस्था ही
स्पष्ट, स्थूल भौतिक प्रत्यक्ष का साक्षात
प्रत्यक्ष कराती है। बैखरी बोली
ही व्यक्त रूप में मनुष्य भाषा के पारस्परिक
होता है। इसलिए विराट और बैखरी
सद्रूप कहा जाता है। सद्रूप

अर्थात् सत् का रूप। सत (परमेश्वर) का जो रूप (आकार) है, वही सद्रूप कहलाता है। परमात्मा या सत तो केवल ब्रह्म मात्र है, जो परब्रह्म कहा जाता है। परब्रह्म ब्रह्म की तुरीय अवस्था है। इसीलिए परा वाक ही शब्दब्रह्म है जो अपनी तुरीय अवस्था में परम सत्ता है। सत् सत्ता है हिरण्यगर्भ ज्ञान रूप है। ज्ञान मानसिक और अमूर्त होता है। स्वप्न भी मानसिक और अमूर्त है। मध्यमा वाक भी अमूर्त और मानसिक है। ईश्वर को आनन्द रूप बतलाया गया है। सुषुप्ति की अवस्था आनन्द की अवस्था है। ईश्वर का साक्षात्कार अत्यल्प को ही हो सकता है। पश्यन्ती वाक को भान होना भी आनन्द की अनुभूति है।

इस प्रकार हम पाते हैं कि वाक के चार स्तर ब्रह्म या आत्मा के चार स्तरों के समान हैं। अतः वाक या भाषा का स्वरूप तात्विक है। वस्तुतः वाक या भाषा ब्रह्म के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है, तभी तो हठयोग प्रदीपिका में कहा गया है कि वाक (भाषा) निराकार और निःशब्द होता है जिसे परब्रह्म या परमात्मा के नाम से जाना जाता है। भागवत पुराण में भी शब्द (वाक, भाषा) को ईश्वर कहा गया है, और उसे समुद्र के

समान गहरा, असीम और अनन्त बतलाया गया है जिसे आत्मक पाना अत्यन्त कठिन है। ऋग्वेद में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि वाक् (भाषा) ही सर्वोच्च सत्ता है। विश्व में प्राचीनकाल से सभी मनुष्य, पशु और देवता इसी सर्वोच्च सत्ता की अभिव्यक्ति मात्र है। वस्तुतः संसार का बीज, जिसे तंत्र दर्शन में बिन्दु कहा जाता है, की उत्पत्ति स्पन्दन युक्त ध्वनि (जिसे नाद कहा जाता है) से होती है। तंत्र दर्शन में वाक के स्फुरण का आधार 'चक्र' बतलाया गया है। साधारणतः छः प्रकार के चक्रों की कल्पना की गयी है। ये चक्र हैं — मूलाधार, मणिपुर, स्वाधिष्ठान, अनहत, विशुद्ध और आज्ञा। इन चक्रों का स्थान क्रमशः गुदामूल, हृदय, कंठ, नेत्र-भौंहों के मध्य और सुषुम्ना नाड़ी है। सुषुम्ना के अतिरिक्त इडा, पिंगला आदि नाड़ियाँ पायी जाती हैं, जिनका तंत्र दर्शन में विस्तार से वर्णन हुआ है। ये नाड़ियाँ कुंडलिनी में अवस्थित रहती हैं। कुंडलिनी द्वारा ही वाक की अभिव्यक्ति होती है। षट्चक्र निरूपण में कहा गया है कि वर्ण (अक्षर) के रूप में जिस ध्वनि का उच्चारण होता है, वह मूलाधार चक्र से उत्पन्न होने वाली दीर्घकालीन प्रक्रिया का परिणाम है। मूलाधार चक्र से उत्पन्न यह ध्वनि धीरे-धीरे प्राणवायु द्वारा विशुद्ध चक्र तक तबतक आती है।

जबतक बैखरी वाक या वाणी
उत्पत्ति नहीं हो जाती है। तात्पर्य यह है कि
वाक या भाषा का स्रोत मूलाधार चक्र है।
इसी चक्र में कुंडलिनी पायी जाती है।
सर जॉन वुड्रॉफ ने अपनी पुस्तक
"द सरपेंट" पावर में लिखा है कि
"परावाक का स्थान मूलाधार चक्र है
जहाँ कुंडलिनी पायी जाती है। स्वाधिष्ठान
चक्र नाभि स्थल में पाया जाता है जो
पश्यन्ती का स्थान है। अनहत चक्र
हृदय प्रदेश में अवस्थित है जो मध्यमा
का स्थान है। विशुद्ध चक्र कंठ में अवस्थित
है जो बैखरी का स्थान है। ये स्थान सुषुम्ना
मेरुदंड के विभिन्न स्थान वाक के विभिन्न
स्तरों का आधार है। इससे भी यह
बात स्पष्ट होती है कि वाक मूलतः
एक है, लेकिन हम अपनी सुविधा
के लिए उसे विभिन्न स्तरों में विभाजित
करते हैं। महामहोपाध्याय पंडित गोपीनाथ
कविराज के शब्दों में "पश्यन्ती, मध्यमा
और बैखरी क्रमशः प्रणव के 'अ'
कार 'उ' कार और 'म' कार है। ये
अखंड परावाक या शब्दब्रह्म का ही
त्रिविध परिणाम मात्र है। ये तीन प्रकार
के शब्द (सृष्टि, स्थिति और संहाररूप)
तीन प्रकार के व्यापार (वामा, ज्येष्ठा और
रौद्री क्रिया) तीन प्रकार के देव-अंश
(ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र रूप) अथवा
तीन प्रकार के शक्ति (इच्छा,
ज्ञान और क्रियारूप) के प्रतिनिधि

है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतीय भाषाविश्लेषण विभिन्न भारतीय दार्शनिक सम्प्रदायों की तत्वमीमांसा के आधार पर की गयी है।